Headline: Interview of Ms. Chitra Ramkrishna, MD & CEO, NSE	
Source: Dainik Bhaskar	**Date:** 26 September 2016

भास्कर इंटरव्यू वर्ष 2015-16 में देश में सर्वाधिक वेतन (9.1 करोड़ रु.) पाने वाली महिला सीईओ चित्रा रामकृष्ण वर्ष 2013 से नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) की एमडी और सीईओ हैं। वे एनएसई की संस्थापक सदस्यों में रही हैं। उनसे मुंबई में एनएसई हेडऑफिस में बात की धर्मेन्द्र सिंह भदौरिया ने।

'नियम तोड़ने वाली 140 कंपनियां अक्टूबर तक होंगी डीलिस्ट'

▪ आम आदमी या नए निवेशकों को जोड़ने के लिए एनएसई क्या कर रहा है?

-पिछले 15 वर्षों से हमारी कोशिश रही है कि ऐसे प्रोडक्ट बाजार में उतारें, जिनके बारे में सब समझते हों या सबकी पहुंच में हो। ईटीएफ भी वह जरिया है, जिससे कम राशि में निवेश कर सकते हैं। गोल्ड ईटीएफ, निफ्टी ईटीएफ और 50 ऐसे ही प्रोडक्ट आम लोगों या छोटे निवेशकों के लिए हैं। शेयर के अतिरिक्त भी लोगों को जोड़ने के लिए सॉवरिन गोल्ड बॉन्ड आदि भी हमने लॉन्च किए हैं।

▪ निवेशकों की संख्या पिछले 10 साल से दो करोड़ से अधिक नहीं बढ़ पा रही है?

- एक्सचेंज के नाते हमारी कोशिश है निवेशकों को सभी प्रकार के विकल्प उपलब्ध कराएं। संख्या की बजाए निवेशक सुरक्षा हमारी प्राथमिकता है। निवेशकों की भागीदारी घटती-बढ़ती रहती है। पिछले दो-तीन वर्ष में देखने में आया है कि ईटीएफ में नए-नए निवेशक आए हैं। कुछ पुराने निवेशक बाजार से गए भी हैं। सॉवरिन बॉन्ड में ही अभी तक पांचवें चरण में दो लाख से अधिक एप्लीकेशन आए हैं।

▪ तो एक्सचेंज लोगों को समझा नहीं पा रहे हैं?

- समझाने में वक्त लगता है। एक या दो संस्था इस कार्य को नहीं कर सकते हैं। हम लगातार स्कूल, कॉलेज, पहली बार आमदनी वाले ग्रुप और आम लोगों को जागरूक कर रहे हैं। पिछले वर्ष ही 1,550 अवेयरनेस प्रोग्राम में हमने करीब एक लाख लोगों को जानकारी दी है। देश के 225 स्कूलों में भी जागरूकता कार्यक्रम किए हैं, जिसमें 1.4 लाख स्कूली बच्चों को जानकारी दी है। दोनों कार्यक्रम लगातार जारी हैं। हमने स्कूलों में भी नौवीं के सिलेबस में इसे जोड़ा है। जल्द ही कुछ स्कूल चेन और राज्यों के साथ इस कोर्स को शुरू करेंगे। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में बीकॉम और एमबीए के कोर्स में भी इसे जोड़ा है।

▪ शेयर बाजार अभी भी रईसों के लिए ही जाना जाता है, आम आदमी के लिए नहीं।

-यह शिक्षा और जागरूकता का भी मामला है। कुछ लोगों को पता नहीं होता है। वर्तमान में हम निवेशकों को शेयर बाजार, ईटीएफ प्रोडक्ट क्या है? जैसी बातें समझा रहे हैं। मिथ को तोड़ना होगा। हकीकत यह है कि 100 रुपए की राशि के साथ भी शेयर बाजार में ट्रेडिंग की जा सकती है।

▪ छोटे शहरों तक पहुंच बढ़ाने के लिए क्या कोशिश हो रही हैं?

देश में वित्तीय नियम और कायदा बहुत सख्त है। ट्रेडिंग के मुकाबले शिकायतों की संख्या विश्व के किसी भी एक्सचेंज की तुलना में एनएसई में सबसे कम हैं। शिकायतों पर हम कंपनियों को डीलिस्ट भी करते हैं। नियम तोड़ने और अन्य कारणों से इसी साल हमने 140 कंपनियों की पहचान की है। इस महीने तक (सितंबर तक) 80 और अक्टूबर तक 60 कंपनियों को हम डीलिस्ट कर देंगे।

-वर्तमान में एक्सचेंज के 2500 से अधिक शहरों में ढाई लाख से अधिक टर्मिनल चल रहे हैं। हम कई तरह से छोटे शहरों में जा रहे हैं। हमने मोबाइल के जरिए भी ट्रेडिंग शुरू की है, क्योंकि देश में करीब सभी लोगों के पास मोबाइल है। वर्ष 2015-16 में प्रतिदिन 362 करोड़ रुपए से अधिक की ट्रेडिंग मोबाइल के द्वारा हो रही थी। पिछले दो वर्ष में हमने 10 से 12 स्थानों पर वन मेन ऑफिस खोले हैं। आने वाले समय में और भी लाएंगे। ये सभी छोटे शहरों में ही होंगे।

▪ करीब दो वर्ष में 50 से भी कम एसएमई की इंडेक्स में लिस्टिंग क्यों हो पाई?

-अभी तक करीब 40 एसएमई कंपनी लिस्टेड हैं। पांच से 10 फीसदी ही एसएमई कंपनियों को इक्विटी की आवश्यकता होती है। हमारा काम है कि जो भी कंपनी लिस्ट होना चाहती है और पैसा चाहती है उसे हम प्लेटफार्म दें। एसएमई का आकार छोटा होता है, उन्हें लगता है कि पैसा लाने में ही 15 से 18 फीसदी रकम खर्च हो जाएगी तो फिर वे बैंक का रुख करते हैं। ऐसे में हम एसएमई कंपनियों को रेटिंग करवाने और इसके लिए कंपनियों को आर्थिक मदद भी देते हैं। वैसे, आखिर में तो कंपनियों को ही आगे आना होगा।

▪ शेयर बाजार का मतलब बीएसई या सेंसेक्स ही क्यों है? एनएसई क्यों नहीं?

-देश के मार्केट शेयर के मामले में कैश मार्केट में हमारी 86.14 फीसदी, फ्यूचर एंड ऑप्शन में 99.99 फीसदी, करंसी (सीडीएस) में 58 फीसदी हिस्सेदारी है। हम अपने निवेशक, और उनके संतुष्टि स्तर से खुश हैं। वैसे एक बात और है कि 140 वर्ष और 23 साल में अंतर तो होता ही है।

▪ आप 23 वर्ष से एनएसई से जुड़ी हैं, इतने वर्षों में क्या बदलाव देखे?

-तकनीक इस पूरे दौर में बड़ी ताकत बनी है। इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग-ट्रांसपेरेंट सिस्टम हुआ है। 1993 से पहले सीमित शहरों में मार्केट की पहुंच थी, लेकिन अभी 2,500 से अधिक शहरों में ट्रेडिंग हो रही है। प्रोफेशनल इंटरमीडियटरीज आए हैं। पहले इक्विटी-डिबेंचर था लेकिन आज पूरे प्रोडक्ट की लंबी श्रृंखला है।